डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)–848125
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
ग्रामीण कृषि मौसम सेवा

बुलेटिन संख्या–21
दिनांक– शुक्रवार, 13 मार्च, 2026

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय बेधशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 31.3 एवं 19.4 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 97 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 67 प्रतिशत, हवा की औसत गति 3.8 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण 2.5 मि0मी0 तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 3.0 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से0मी0 की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 23.1 एवं दोपहर में 32.5 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(14–18 मार्च, 2026)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 14–18 मार्च, 2026 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमानित अवधि के दौरान मौसम में परिवर्तन होने की संभावना है। मौसमीय सिस्टम के सक्रिय होने के कारण उत्तर बिहार के सभी जिलों के अधिकांश स्थानों पर 16–17 मार्च के बीच हल्की वर्षा होने की संभावना है। इस दौरान कई स्थानों पर आकाशीय बिजली चमकने, कुछ जगहों पर तेज हवा चलने तथा कहीं–कहीं ओलावृष्टि होने की भी आशंका है। इसके अतिरिक्त अन्य दिनों में मौसम मुख्यतः शुष्क रहने की संभावना है।
- इस अवधि में अधिकतम तापमान 31 से 34 डिग्री सेल्सियस तथा न्यूनतम तापमान 20 से 21 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है।
- औसतन 4–6 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से मुख्यतः पुरवा हवा चलने का अनुमान है। 17–18 मार्च के आसपास तेज हवा चल सकती है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 85 प्रतिशत तथा दोपहर में 20 से 25 प्रतिशत रहने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- 16–17 मार्च के आसपास वर्षा की संभावना को देखते हुए किसानों को दैनिक कृषि कार्यों में सावधानी बरतनी चाहिए। कटे हुए फसलों को सुरक्षित स्थान पर रखें और खड़ी फसलों में सिंचाई मौसम की स्थिति को देखकर ही करें। इस अवधि में फसलों पर कीटनाशक दवाओं का छिड़काव स्थगित रखें। वर्षा की संभावना को ध्यान में रखते हुए गरमा सब्जियों की बुआई फिलहाल रोक दें तथा वर्षा होने के बाद तुरंत बुआई करें।
- लौकी की खेती के लिए अर्का बहार, काशी कोमल, काशी गंगा, पूसा समर, प्रोलिफिक लॉन्ग, पूसा मेद्यदूत, पूसा मंजरी और पूसा नवीन किस्मों की बुआई करें। तरबूज के लिए अर्का मानिक, दुर्गापुर मधु, सुगरबेबी और अर्का ज्योति (संकर) तथा खरबूज के लिए अर्का जीत, अर्का राजहंस और पूसा शर्बती किस्में उत्तर बिहार के लिए अनुशंसित हैं। नेनुआ के लिए पूसा चिकनी और स्वर्ण प्रभा तथा करेला के लिए अर्का हरित, काशी उर्वशी, पूसा विशेष और कायमबटूर लॉन्ग किस्में उपयुक्त हैं। खेत की जुताई करते समय 20–25 टन गोबर की खाद, 30 किलोग्राम नाइट्रोजन, 50 किलोग्राम फॉस्फोरस और 40 किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करें।
- वर्षा से मिट्टी में आई नमी का लाभ उठाते हुए बसंतकालीन ईख की रोपाई में तेजी लाएँ। रोपाई के लिए दोमट मिट्टी तथा ऊँची जमीन का चयन करें और खेत की गहरी जुताई करें। अनुशंसित किस्मों का चुनाव कर बीज को कार्बेन्डाजिम (1 ग्राम प्रति लीटर पानी) के घोल में 15–20 मिनट तक उपचारित करने के बाद रोपाई करें। बीज रोग–मुक्त खेतों से लिया हुआ होना चाहिए तथा जहाँ तक संभव हो 8–10 महीने की फसल को ही बीज के रूप में उपयोग करें।
- गरमा मूंग तथा उरद की बुआई सावधानीपूर्वक करें या वर्षा होने के बाद करें। बुआई से पहले 20 किलोग्राम नाइट्रोजन, 45 किलोग्राम फॉस्फोरस, 20 किलोग्राम पोटाश और 20 किलोग्राम गंधक प्रति हेक्टेयर की दर से दें। मूंग के लिए पूसा विशाल, सम्राट, एसएमएल–668, एचयूएम–16 और सोना किस्में तथा उरद के लिए पंत उरद–19, पंत उरद–31, नवीन और उत्तरा किस्में अनुशंसित हैं। बुआई से दो दिन पहले बीज को कार्बेन्डाजिम 2.5 ग्राम प्रति किलोग्राम की दर से शोधित करें और बुआई से ठीक पहले उचित राइजोबियम कल्चर से उपचारित करें। बीजदर छोटे दानों के लिए 20–25 किलोग्राम और बड़े दानों के लिए 30–35 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें तथा कतारों की दूरी 30×10 सेमी रखें।
- बैंगन की फसल में तना एवं फल छेदक कीट की नियमित निगरानी करें। इस कीट के लार्वा फल में घुसकर अंदर से उसे खा जाते हैं जिससे फल की बढ़वार रुक जाती है और वह खाने योग्य नहीं रहता। अधिक प्रकोप होने पर पहले प्रभावित तना और फलों को तोड़कर नष्ट कर दें। इसके बाद मौसम साफ रहने पर स्पिनोसैड 48 ईसी 1 मि.ली. प्रति 4 लीटर पानी या क्विनालफॉस 1.5 मि.ली. प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- इन दिनों आम के बागों में पूरी तरह मंजर आ चुका है। मंजर आने से लेकर फल के मटर के दाने के आकार तक पहुँचने की अवस्था के बीच किसी भी प्रकार के कृषि रसायन का प्रयोग न करें। यदि कोई मंजर विकृत दिखाई दे तो उसे तोड़कर बाग से बाहर ले जाकर जला दें या जमीन में गाड़ दें।
- वर्षा की संभावना को देखते हुए ओल की रोपाई सावधानीपूर्वक करें। रोपाई के लिए गजेन्द्र किस्म अनुशंसित है। प्रत्येक 0.5 किलोग्राम के कंद को 75×75 सेमी दूरी पर लगाएँ और 0.5 किलोग्राम से कम वजन के कंद का प्रयोग न करें। बीजदर लगभग 80 क्विंटल प्रति हेक्टेयर रखें। रोपाई से पहले प्रत्येक गड्ढे में 3 किलोग्राम सड़ी हुई गोबर की खाद, 20 ग्राम अमोनियम सल्फेट या 10 ग्राम यूरिया, 37.5 ग्राम सिंगल सुपर फॉस्फेट और 16 ग्राम पोटेशियम सल्फेट मिलाएँ। कटे हुए कंदों को ट्राइकोडर्मा विरिडी 5 ग्राम प्रति लीटर गोबर के घोल में 20–25 मिनट तक डुबोकर रखें, फिर निकालकर छाया में 10–15 मिनट सुखाकर रोपाई करें ताकि मिट्टी जनित रोगों से बचाव हो सके और अच्छी उपज प्राप्त हो।

आज का अधिकतम तापमानः 31.2 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 1.0 डिग्री सेल्सियस अधिक	आज का न्यूनतम तापमानः 20.0 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 4.6 डिग्री सेल्सियस अधिक

(डॉ0 ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकारी